ISSN 0975-735X
UGC Approved
Impact Factor 2.978

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

# शोध दिशा

## 40

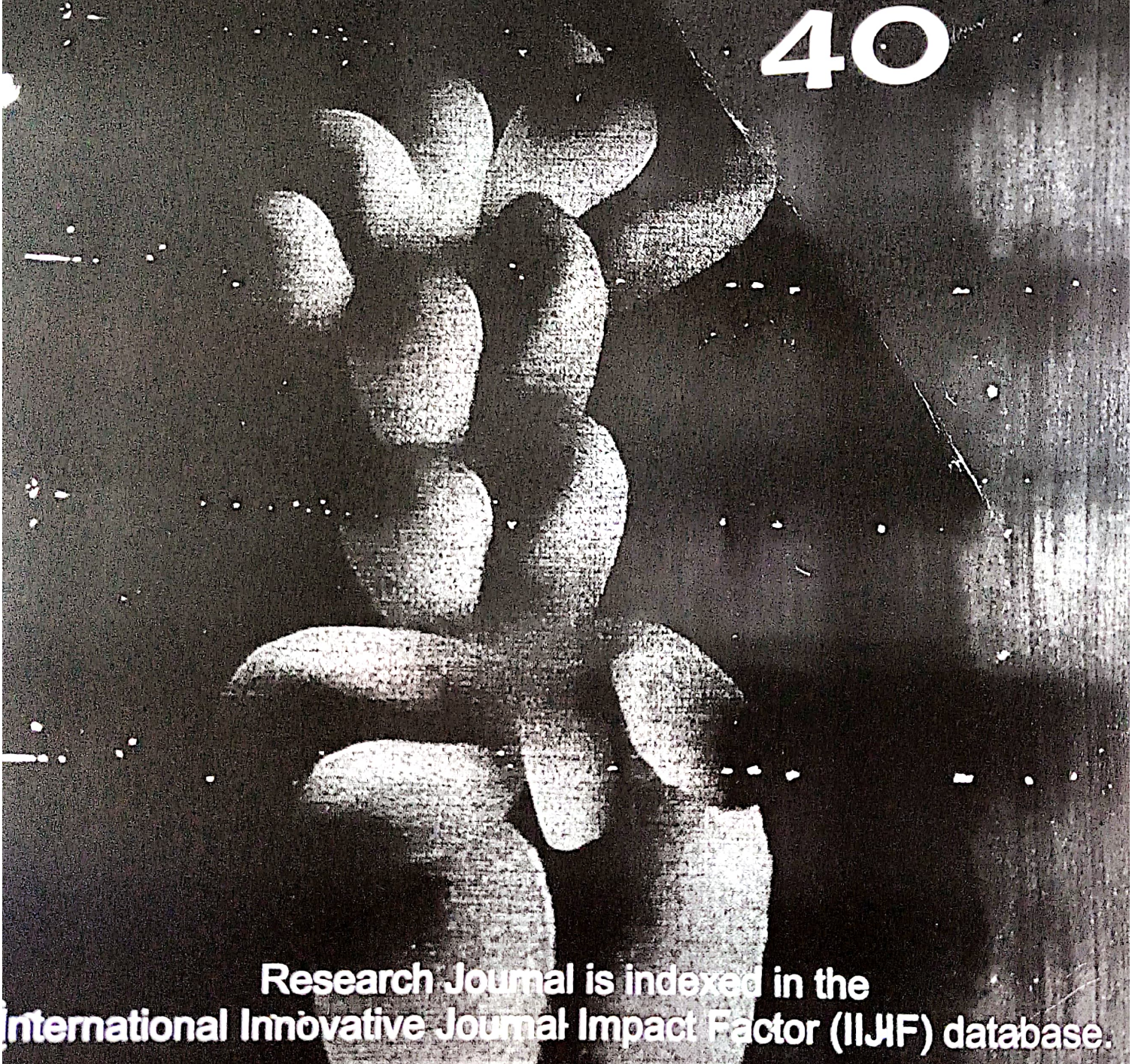

Research Journal is indexed in the
International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) database.

International
Innovative Journal
Impact Factor (IIJIF)

# शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त पत्रिका

शोध अंक 40 | मार्च 2018 | 200.00 रुपए



**संपादकीय कार्यालय**
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

**क्षेत्रीय कार्यालय**

हरियाणा
**डॉ० मीना अग्रवाल**
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
**डॉ० अनुभूति**
सी-106, शिव कला
बी 9/11, सैक्टर 62, नोएडा
फोन : 09560554612

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

**संपादक**
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

**प्रबंध संपादक**
डॉ० मीना अग्रवाल

**संयुक्त संपादक**
डॉ० शंकर क्षेम

**उपसंपादक**
डॉ० रश्मि त्रिवेदी

**कला संपादक**
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

**उपसंपादक**
डॉ० अशोककुमार 09557746346

**विधि परामर्शदाता**
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

**आर्थिक परामर्शदाता**
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०


**शुल्क**

आजीवन : व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : छह सौ रुपए
यह प्रति : दो सौ रुपए


प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)



स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

पाँच बहतरीन कहानियाँ : अजय नावरिया सामाजिक यथार्थ का एक दस्तावेज/ **डॉ॰ कंचन पुरी, श्रीमती स्नेहलता** 153
यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' की कहानियों में सदस्यों की स्वार्थ भावनाओं की समस्या का अध्ययन/ **डॉ॰ सतीशकुमार** 161
भारतीय साहित्य में नारी वैष्यम्य/ **शकुंतला वाघ** 164
अशोक वाजपेयी की कविता में अभिव्यक्त मृत्युबोध/ **प्रो॰ डॉ॰ सदानंद भोसले, नवनाथ शिंदे** 167
कबीर की क्रांतिधर्मिता और सांस्कृतिक प्रवाह/ **डॉ॰ माला मिश्र** 174
शमशेरबहादुर सिंह की काव्यभाषा में बिंब-विधान/ **डॉ॰ अनीता रानी** 182
अर्थ-परिवर्तन : दिशाएँ/ **डॉ॰ आलोककुमार सिंह** 188
सवाल साहित्य के : स्वानुभूति के विविध आयाम/ **डॉ॰ निशा तिवारी** 193
भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में मेवाती संस्कृति का विश्लेषण/ **डॉ॰ वरिंदरजीत कौर** 201
मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में निम्नवर्गीय जीवन/ **वसीम** 208
सामाजिक सरोकार के कवि केदारनाथ अग्रवाल/ **डॉ॰ रतनप्रकाश मिश्र** 212
योगशिक्षा और मूल्याधारित शिक्षा में उसका महत्त्व/ **अमित मोहन** 217
अरुण कमल के काव्य में स्थानीयता बनाम राष्ट्रवाद/ **मोनिका वर्मा** 227
श्रमिकवर्ग तथा शेखर जोशी का रचना-संसार/ **डॉ॰ संजयकुमार राठौर** 234
नरेंद्रमोहन के नाटकों में नारीमुक्ति की कामना/ **डॉ॰ संतराम वैश्य, रितु** 238
गुरु गोविंदसिंह के साहित्य में वीर-भावना/ **डॉ॰ राजविंद्र कौर** 241
निराला की कविताओं में मुक्त छंद विधान/ **डॉ॰ दीप्ति** 251
संत नितानंद का साधना पथ/ **सुधा महला** 256
वर्तमान समाज में स्त्री-चिंतन/ **सर्वदमन त्रिपाठी** 260
नारी-अस्मिता : बदलता स्वरूप और साहित्य/ **सुमिता त्रिपाठी** 263
वित्तपोषण योजनाओं में लघु उद्योग इकाइयों की समस्या एवं समाधान/ **डॉ॰ प्रमोदकुमार त्रिपाठी** 267
जातीय व वर्गीय चेतना एवं समाजवादी पार्टी/ **डॉ॰ शशिकांत मणि त्रिपाठी** 270
Shashi Deshpande's Views on Feminism/ **Dr. M.S.Vimal** 275
Feministic Approach of Shashi Deshpande/ **Haricharan Ahirwar** 279
Moral Strategy to Check Declining Child Sex Ratio/ **Dr. Kavita Bhatt** 283

शोध दिशा के विशेषांक जो शीघ्र प्रकाशित होगा।
डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका : सृजन और साहित्य विशेषांक
आपकी सक्रिय भागीदारी की अपेक्षा है।

ISSN 0975-735X

# निराला की कविताओं में मुक्त छंद-विधान

**डॉ॰ दीप्ति**
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिंदू कॉलेज, अमृतसर (पंजाब)

छंद-बंध ध्रुव तोड़-फोड़कर पर्वत कारा
अचल रूढ़ियों को कवि, तेरी कविता-धारा
मुक्त, अबाध, अमंद, रजत निर्झर-सी नि:सृत
गलित-ललित आलोक-राशि, चिर अकलुष विजित।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में सुमित्रानंदन पंत ने सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के व्यक्तित्व और कृतित्व का सटीक वर्णन किया है। छायावाद के प्रधानस्तंभ श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का आधुनिक हिंदीकवियों में निसंदेह महत्त्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि उन्हें व्यक्तिगत जीवन में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। 'निराला' का जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। उन्होंने निरंतर अनेक अभावों को झेलने के बाद भी हिंदी साहित्य को बहुमूल्य रचनाओं का योग दिया। उन्होंने परिमल, अनामिका, अपरा, कुकुरमुत्ता, गीतिका, अणिमा, बेला, अर्चना, आराधना, गीतगुंज, नए पत्ते, तुलसीदास जैसी अमूल्य कृतियाँ का हिंदी साहित्य को प्रदान कीं। निराला के काव्य में वस्तुत: जीवन का प्रत्येक रंग–खुशी, दुख-सुख, प्रेम और वैराग्य इत्यादि मिलता है।

निरालाजी ने अपनी काव्य-यात्रा 1916 ई॰ में सर्वप्रथम प्रकाशित काव्य-संग्रह 'जूही की कली' से आरंभ की। इस काव्य-संग्रह में हमें कवि की प्रतिभा का प्रथम परिचय मिलता है। उनके 1922 ई॰ में प्रकाशित दूसरे काव्य-संग्रह 'अनामिका' में उनकी काव्यकला का प्रौढ़ रूप परिलक्षित होता है। उनकी उत्कृष्ट रचनाएँ 'राम की शक्तिपूजा' और 'सरोज स्मृति' इसी काव्य-संग्रह में संकलित हैं। 'परिमल' नामक कृति में 'तुम और मैं' जैसी अध्यात्मवादी और 'भिक्षुक' और 'विधवा' जैसी प्रगतिशील रचनाओं से कवि की प्रगतिशील सोच का पता लगता है। इसके अतिरिक्त उनके ललित गीतों का संकलन 'गीतिका' भी है। उनकी रचना 'तुलसीदास' जहाँ प्रबंधकाव्यात्मक रचना है, वहीं 'कुकुरमुत्ता' विशुद्ध रूप से प्रगतिवादी रचनाओं का संग्रह हैं। अणिमा, नए पत्ते, बेला आदि रचनाओं में उनका विषादपूर्ण आत्मदर्शन दृष्टिगोचर होता है। आत्म-अभिव्यक्ति की दृष्टि से अर्चना, अराधना, गीतगुंज तीन संग्रह महत्त्वपूर्ण हैं। निराला ने अद्‌भुत प्रतिभा का परिचय देते हुए भाषा, छंद, अभिव्यक्ति के क्षेत्र में सफलतापूर्वक नवीन प्रयोग किए।

## मुक्तछंद : अवधारणा

कलापक्ष के क्षेत्र में निराला की मुख्य देन मुक्तछंद है। मुक्तछंद कोई नई अवधारणा नहीं है। हमें इसके बीज प्राचीन साहित्य में ही मिल जाते हैं। प्राचीन वैदिक साहित्य में भी स्वतंत्र छंदों



ISSN 0975-735X

का प्रयोग मिल जाता है। आधुनिककाल में द्विवेदीयुग में ही तुकों से छंद की स्वतंत्रता शुरू हो गई थी, लेकिन उसे पूर्ण रूप से मुक्त कराने का श्रेय निराला को ही जाता है। 'परिमल' की भूमिका में मुक्तछंद के समर्थन में निराला जी कहते हैं, 'मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी तरह भी दूसरे के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उसके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं फिर स्वतंत्र, इसी तरह कविता का भी हाल है।'[2] छंदों की मुक्ति के समर्थक निराला को आरंभ में काफी विरोधों का सामना करना पड़ा। उनकी लंबी कविताओं में कोई चरण बहुत लंबा होता था, कोई चरण बहुत छोटा होता था और कोई मँझोला, जिस कारण इन छंदों को 'रबड़ छंद' या 'केंचुआ छंद' भी कहा जाने लगा। सर्वविदित है कि मुक्तछंद के चरण समान नहीं होते और न ही इनमें कोई तुक पाई जाती है, परंतु वास्तविकता में मुक्तछंद में एक लय समाहित होती है। इसप्रकार रूढ़ि मुक्त काव्य में कविता का रूप और भी निखरकर सामने आता है।

निराला की पहली कविता 'जूही की कली' में छंदों की रूढ़ियों से मुक्त कविता के दर्शन होते हैं। हिंदी की प्रथम मुक्तछंद की कविता के रूप में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस कविता में विषम चरण जहाँ दृष्टिगोचर होते हैं, वहीं इसमें तुक भी नहीं मिलती, परंतु इसमें हमें एक लय मिलती है–'जब तक चरण स्वच्छंद न रहेंगे, तब नुपूर से मनमाना सुर कैसे निकलेगा। निरालाजी के शब्दों में, 'नुपूर के सुर मंदे रहे, जब न चरण स्वछंद रहें।'[3]

निरालाजी की विचारधारा में समय-समय पर परिवर्तन आता रहा। उनकी मुख्य मुक्त छंद प्रधान रचनाओं–परिमल, अपरा और गीतिका में छायावाद, रहस्यवाद और प्रगतिवाद तीनों की अभिव्यक्ति है। उनकी छायावादी रचनाओं में जहाँ प्रेम, प्रकृति चित्रण तथा कल्पना का सुंदर प्रयोग मिलता है, वहीं प्रगतिवादी कविताओं में यथार्थ और अनुभव का पूर्ण विकास परिलक्षित होता है। उनकी रहस्यवादी कविताओं में हमें गूढ़ चिंतन दिखाई देता है।

सर्वप्रथम यहाँ मुक्तछंद प्रधान छायावादी कविताओं का विश्लेषण करते हैं। उनकी प्रथम छायावादी रचना 'जूही की कली' में श्रृंगार के संयोगपक्ष का बहुत सुंदर प्रतीकात्मक चित्रण मिलता है। इस रचना में विजय-वन-वल्लरी पर सोती हुई 'सुहागभरी' कली नायिका रूप में चित्रित हुई है और नायक है पवन। प्रकृति-चित्रण की दृष्टि से भी यह रचना उल्लेखनीय है–

नायक ने चूमे कपोल
डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल।[4]

इस कविता में अभिव्यक्त संयोग श्रृंगार के अंतर्गत उन्मुक्त प्रेम के चित्र और मुक्त छंद सर्वप्रथम निराला ने प्रस्तुत किया, जिस कारण इन्हें विरोधों का भी सामना करना पड़ा।

निराला की छायावादी कविता में प्रेम के सूक्ष्म एवं स्थूल दोनों प्रकार के वर्णन मिलते हैं। उनकी रचनाओं में प्राकृतिक सौंदर्य-वर्णन की भी प्रधानता रही। उन्होंने प्रकृति को अप्रस्तुत एवं प्रतीक विधान के रूप में बड़ी खूबसूरती से चित्रित किया। प्रकृति की मनोहर छवियों ने इनके मन को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने प्रकृति के साथ रागात्मक तादात्म्य स्थापित करते हुए उसका चित्रण किया है। उदाहरणस्वरूप सांध्य सौंदर्य का एक चित्र लीजिए, जिसमें संध्या की कल्पना परी-सी सुंदरी के रूप में चित्रित की गई है–

ISSN 0975-735X

दिवावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।[5]

निरालाजी कहीं-कहीं साधना को प्रियतमा मानकर उससे प्रणय-निवेदन करते हैं। ऐसी ही उनकी रचना 'कविता' में कविता-देवी को उस पार सुदूर चट्टानी समुद्र तट पर बैठा हुआ देखता है और वहाँ से कविता उसे आकर किस प्रकार अपनाती है, उसका चलचित्र कवि के शब्दों में देखिए–

भरा हुआ था हृदय प्यार से उसका
उस कविता का
वह थी, निश्च्छल अविकार
अंग-अंग से उठी तरंगें उसके
वे पहुँची कवि के पास
कहा–
तुम चलो, बुलाया है उसने जल्दी तुमको उस पार।[6]

निरालाजी ने अपनी मुक्तछंद प्रधान रहस्यवादी रचनाओं में प्रकृति की सुंदरता का अंकन करते हुए उसे अध्यात्म का रंग दिया। उन्होंने प्रकृति के क्रिया-व्यापारों के चित्रण द्वारा ईश्वर की विराट सत्ता का सांकेतिक रूप में अंकन किया है। इसी के साथ कहीं-कहीं आत्मा और परमात्मा के संबंध पर भी प्रकाश डाला है। उनकी रचना 'तुम और मैं' में रहस्यवादी भावना की अभिव्यक्ति मिलती है–

तुम तुंग हिमालय शृंग
और मैं चंचल गति सुर सरिता
तुम विमल-हृदय उच्छ्वास और
मैं कांतकामिनी कविता।[7]

निरालाजी की रहस्यवादी रचनाओं में प्रेम का मधुर गान भी सुनाई देता है। उनकी 'रेखा' कविता में उस अदृश्य विराट सत्ता के प्रति प्रथम प्रेम का वर्णन मिलता है–

यौवन के तीर पर प्रथम था आया अब
स्रोत सौंदर्य में
वीचियों में कलरव सुख-चुंबित प्रणय का
था मधुर आकर्षणमय
मज्जनावेदन मृदु फूटता सागर में। [8]

निरालाजी की कविताएँ न केवल प्रेम अथवा सौंदर्य-चित्रण और अध्यात्म को अभिव्यक्त करती रहीं, बल्कि उनमें जनजीवन का यथार्थ चित्रण भी मिलता है। कल्पना, अनुभूति और सौंदर्य विषयों पर चलनेवाली उनकी कलम अब ठोस यथार्थ पर चलने लगी। सहृदय निराला ने समाज तथा व्यक्ति के दुख को महसूस कर अपने काव्य में अभिव्यक्त किया। उन्होंने जीवन के कटु यथार्थ को सर्वहारावर्ग का अंकन भी अपनी रचनाओं में किया। उदाहरण के लिए 'भिक्षुक' के



ISSN 0975-735X

प्रति उनकी सहानुभूति का चित्र देखा जा सकता है–

वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
x x x
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते
और दाहिना दयादृष्टि पाने की ओर बढ़ाए। [9]

निरालाजी की 'कुकुरमुत्ता' रचना में प्रगतिशील विचारधारा की अभिव्यक्ति हुई है। 'कुकुरमुत्ता' हास्य-व्यंग्य शैली की रचना है। इसमें सर्वहारावर्ग का प्रतिनिधि 'कुकुरमुत्ता' है, जो पूँजीपतिवर्ग के प्रतिनिधि 'गुलाब' का विरोध करता है। इस कृति में कुकुरमुत्ता गुलाब से निशंक भाव से कहता है–

अबे सुन बे गुलाब!
भूल मत गर पाई खुशबू रंगो-आब
खून चूसा तूने खाद का अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।[10]

निरालाजी की 'बादल-राग' शीर्षक कविता में इनकी विद्रोही-चेतना विशेष रूप से परिलक्षित होती है–

उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर
ताक रहे हैं, ये विप्लव के बादल
फिर फिर।[11]

निरालाजी की प्रगतिवादी कविताओं में करुणा का भी समावेश मिलता है। उनकी करुणभावयुक्त 'विधवा' कविता की कुछ पंक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं–

वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी
वह दीपशिखा-सी, शांत भाव में लीन
वह क्रूर काल तांडव-सी स्मृति रेखा-सी
वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन
दलित भारत की विधवा है।[12]

निरालाजी ने श्रमिकों की दयनीय दशा का भी चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। उन्होंने मजदूरों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा है–

वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर।[13]

इसप्रकार निराला समर्थ शिल्पी के रूप में हिंदी साहित्य जगत में अवतरित हुए। कल्पना, अनुभूति, संवेदना, आध्यामिकता और यथार्थ इनके कवित्व के प्रमुख तत्त्व हैं। भाषा-शैली में उन्होंने अनेक सफल प्रयोग किए हैं। नए अप्रस्तुतों के आयोजन, बिंब-विधान, प्रतीक-विधान उनकी रचनाओं की विशेषताएँ हैं। उनका हिंदी साहित्य में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान अतुकांत

ISSN 0975-735X



25

मुक्तछंद रहा। निरालाजी के अनुसार, 'मुक्तछंद की रचना में मैंने भाव के साथ सौंदर्य पर ध्यान रखा है। बल्कि कहना चाहिए ऐसा स्वभावत: हुआ, नहीं तो मुक्त छंद न लिखा जा सकता, वहाँ कृत्रिमता नहीं चल सकती।' [14]

मुक्तछंद को अपनाकर निश्चित रूप से कविता को लाभ ही पहुँचा है। निराला के मुक्त छंदों की एक विशेषता यह है कि इसमें विशेष लय, संगीत और स्वर अवश्य मौजूद रहते हैं। आज विदेशी भाषाओं में भी मुक्तछंद का प्रयोग बढ़ रहा है। आरंभ में जिन मुक्तछंद वाली कविताओं का विरोध किया गया, उनका ही बाद में अनेक कवियों ने अनुसरण किया। इसप्रकार निरंतर संघर्षरत निराला ने निरंतर बाधाओं और विरोधों रूपी विष पीकर हिंदी साहित्य जगत को श्रेष्ठ रचनाओं रूपी अमृत प्रदान किया तथा मुक्तछंद रूपी अनमोल उपहार देकर साहित्य की समृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया।

## संदर्भ


1. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ॰ शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1977, पृ॰ 519
2. आधुनिक हिंदी कवियों की काव्यकला, डॉ॰ प्रेमनारायण टंडन, हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ, 1961, पृ॰ 196
3. छायावाद, नामवरसिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1954, पृ॰ 130
4. हिंदी आधुनिक कवि, रवींद्र भ्रमर, भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली, 1966, पृ॰ 65
5. वही, पृ॰ 66
6. आधुनिक हिंदी कवियों की काव्यकला, डॉ॰ प्रेमनारायण टंडन, हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ, 1961, पृ॰ 83
7. हिंदी के प्रमुख साहित्यकार, उदयभानु हंस, अनिल प्रकाशन, दिल्ली, 1995, पृ॰ 88
8. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत 2007, पृ॰ 88
9. हिंदी के प्रमुख साहित्यकार, उदयभानु हंस, अनिल प्रकाशन, दिल्ली, 1995, पृ॰ 89
10. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ॰ शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1977, पृ॰ 519
11. हिंदी साहित्य का इतिहास : रीतिकाल एवं आधुनिककाल, अविनाश शर्मा, गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर, 2003, पृ॰ 141
12. हिंदी के प्रमुख साहित्यकार, उदयभानु हंस, अनिल प्रकाशन, दिल्ली, 1995, पृ॰ 89
13. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत 2007, पृ॰ 88
14. आधुनिक हिंदी कवियों की काव्यकला, डॉ॰ प्रेमनारायण टंडन, हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ, 1961, पृ॰ 196



**द्वारा डॉ॰ साहिल साहनी**
**19-ई, कालेज लेन**
**रानी का बाग**
**अमृतसर (पंजाब)**
**मो॰ 09501077702**